डॉ. गैरी येट्स, पुस्तक 12, सत्र 15, होशे, इस्राएल की आध्यात्मिक बेवफाई, भाग 3

© 2024 गैरी येट्स और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ॰ गैरी येट्स की पुस्तक 12 पर उनकी व्याख्यान श्रृंखला है। यह व्याख्यान 15 है, होशे, इस्राएल की आध्यात्मिक बेवफाई, भाग 3।

भविष्यवक्ता होशे इस्राएल के लोगों को एक गंभीर और चौंकाने वाला संदेश भेजता है कि परमेश्वर उन्हें और उनके व्यवहार, वाचा के भीतर उनके आचरण को देखता है।

परमेश्वर उन्हें एक बेवफा पत्नी के रूप में देखता है जिसने अपने पति के प्रति अपनी प्रतिबद्धताओं और वादों को पूरा नहीं किया है। हमारे पिछले सत्र में, हम कुछ खास तरीकों को देख रहे थे, जिनके द्वारा भविष्यवक्ता ने इस्राएल को यहोवा के प्रति एक बेवफा वाचा भागीदार होने का आरोप लगाया था। याद रखें कि इस पुस्तक का लेआउट यह है कि होशे और गोमेर के बीच विवाह का रूपक हमारे लिए अध्याय एक से तीन में रखा गया है।

फिर, अध्याय चार से 14 में वाचा के मुकदमों की एक श्रृंखला इस्राएल के लोगों के लिए स्पष्ट करती है: यहाँ विशिष्ट तरीके हैं, यहाँ आरोप हैं, अभियोग हैं जो परमेश्वर आपके विरुद्ध ला रहा है। यही कारण है कि परमेश्वर आपको एक विश्वासघाती जीवनसाथी और एक विश्वासघाती वाचा साथी के रूप में देखता है। हमने पिछली बार कई विशिष्ट बातों पर गौर किया था।

परमेश्वर उन पर इस तथ्य का आरोप लगाने जा रहा है कि उन्होंने उसके प्रति हेसेड का अभ्यास नहीं किया है। वाचा के भीतर प्रभु ने अपने हेसेड, अपने वफादार प्रेम और वाचा के प्रति अपनी वफ़ादारी को बनाए रखा है। इस्राएल ने उसके प्रति उचित पारस्परिक प्रतिक्रिया के रूप में ऐसा नहीं किया है।

दूसरा आरोप, इसे थोड़ा और अधिक केंद्रित और विशिष्ट बनाते हुए, उन्होंने वाचा की आज्ञाओं का पालन नहीं किया है। न्याय और हिंसा के मुद्दे और अपने पड़ोसियों का फायदा उठाना और जरूरतमंदों पर अत्याचार करना जो हम आठवीं शताब्दी के अन्य भविष्यवक्ताओं में देखते हैं, वह होशे की पुस्तक में भी परिलक्षित होता है। बेवफाई का तीसरा आरोप, और जिस पर हमने विस्तार से ध्यान केंद्रित किया, और फिर मैं अभी भी थोड़ा सा बात करना चाहूंगा, वह धार्मिक मूर्तिपूजा की समस्या है।

याद रखें, आठवीं शताब्दी में उपदेश देते समय, पैगंबर आमोस, मुझे लगता है, इस्राएल के सामाजिक पापों और न्याय की समस्याओं पर थोड़ा और अधिक ध्यान केंद्रित करेंगे। होशे का भी यही विषय है, लेकिन वह मुख्य रूप से धार्मिक पापों पर ध्यान केंद्रित करने जा रहा है। इस्राएल की मूर्तिपूजा ने विशेष रूप से दो रूप धारण किए।

उनमें से एक में कनानी देवता बाल और कनानी प्रजनन देवी की पूजा और उसके साथ होने वाले सभी अनुष्ठान और प्रथाएँ शामिल थीं। इसलिए, भविष्यवक्ता होशे उन पर अभियोग लगाने जा

रहा है और उन पर बाल की पूजा करने का आरोप लगाएगा, जिसमें कई अन्य अवैध देवता और कनानी धर्म के साथ चलने वाली सभी चीजें शामिल हो सकती हैं। हालाँकि, मूर्तिपूजा का दूसरा तरीका बछड़े के देवता की पूजा करना है, जिसे यारोबाम। ने इज़राइल की भूमि में स्थापित किया था।

यह उत्तरी राज्य की शुरुआत से ही परमेश्वर और उसके लोगों के बीच विवाद का स्रोत रहा है। राजाओं की पुस्तक में उत्तरी राज्य से आने वाले सभी राजा, यहाँ तक कि येहू, जिसके पास इस्राएल से बाल की पूजा को मिटाने की ज़िम्मेदारी है, को ऐसे राजाओं के रूप में लेबल किया गया है जिन्होंने प्रभु की नज़र में बुरा किया। इसका एक बड़ा कारण यह है कि वे अपने पिता यारोबाम के पापों में बने रहते हैं।

इसलिए, हम होशे में यह देखेंगे कि मूर्तिपूजा के आरोप कनानी पूजा पद्धतियों में उनकी भागीदारी पर केंद्रित होंगे। उत्तरी इस्राएल राज्य के बछड़े के देवताओं की भी निंदा की जाएगी। पिछले भाग में हमने जिन अंशों को देखा था, उनमें से कुछ पर वापस जाते हुए, अध्याय 4, श्लोक 13 और 14 में यह कहा गया है, "...वे पहाड़ों की चोटियों पर बलि चढ़ाते हैं और पहाड़ियों पर बलि चढ़ाते हैं, ओक, चिनार और बांज वृक्षों के नीचे, क्योंकि उनकी छाया अच्छी होती है।

इसलिए, तुम्हारी बेटियाँ वेश्यावृत्ति करती हैं, और तुम्हारी दुल्हनें व्यभिचार करती हैं।" इसलिए, ये अवैध प्रथाएँ उत्तरी राज्य में मौजूद सभी विभिन्न स्थलों, ऊँचे स्थानों और पवित्र स्थानों से जुड़ गई थीं। अध्याय 4, श्लोक 17, एप्रैम को मूर्तियों से जोड़ा गया है। "...उसे अकेला छोड़ दो।

जब उनका शराब पीना बंद हो जाता है, तो वे व्यभिचार में लग जाते हैं। उनके शासकों को शर्म बहुत प्रिय है। एक हवा ने उन्हें अपने पंखों में लपेट लिया है, और वे अपने बलिदानों के कारण शर्मिंदा होंगे।" इसलिए, इस्राएल, उनके आस-पास की संस्कृति के कारण, कनानियों के प्रभाव के कारण, बाल की इस पूजा में खींचे चले गए क्योंकि उनका मानना था कि बाल उर्वरता का देवता था, तूफानों का देवता था, वह देवता था जो बारिश लाता था जिससे उनकी फसलें पैदा होती थीं।

वे कनानी प्रजनन देवी की पूजा करते थे क्योंकि देश की महिलाएँ और देश के परिवार मानते थे कि यह एक ऐसा तरीका था जिससे देवता उन्हें संतान का आशीर्वाद देंगे। जे. ग्लेन टेलर, होशे की पुस्तक पर अपनी टिप्पणी में कहते हैं, "...जब तक इस्राएल गर्म जलवायु में वर्षा पर निर्भर था और ऐसे पड़ोसियों के बीच रहता था जो बाल की वर्षा-शक्ति की कसम खाते थे, तब तक बाल को उसका हक देने का कोई न कोई तरीका खोजने का प्रलोभन अवश्यंभावी था।" तो, हम निश्चित रूप से होशे अध्याय 4 में इसे प्रतिबिंबित होते हुए देखते हैं। लेकिन फिर बछड़े के देवताओं और इस्राएल में मौजूद पवित्र स्थलों की समस्या और इसके परिणामस्वरूप जो समन्वयवादी मिश्रण आया, वह यहोवा की पूजा और कनानी देवताओं की पूजा और सोने के बछड़े की पूजा के तत्व थे जो हारून के धर्मत्याग से जुड़े थे। ये सब आपस में मिल गए थे।

अध्याय 8, श्लोक 5 में प्रभु कहते हैं, "...मैंने तुम्हारे बछड़े को तुच्छ जाना है, हे सामरिया, मेरा क्रोध उन पर भड़क रहा है। वे कब तक निर्दोष बने रहेंगे? क्योंकि यह इस्राएल से है; एक

कारीगर ने इसे बनाया है; यह परमेश्वर नहीं है। सामरिया का बछड़ा टुकड़े-टुकड़े कर दिया जाएगा। " इसलिए वे एक ऐसे सोने के बछड़े की पूजा कर रहे हैं जो उनके अपने हाथों का उत्पाद है, न कि एक सच्चे निर्माता, परमेश्वर की।

यह यहोवा को एकमात्र सच्चे ईश्वर के रूप में मानने के साथ मूल रूप से असंगत है। होशे अध्याय 10 की आयत 5 और 6 में भी बछड़े के देवता के बारे में बात की गई है। इसमें यह कहा गया है, "...सामरिया के निवासी बेथ-एवन के बछड़े के लिए कांपते हैं।" और यहाँ उस स्थान का नाम है जहाँ पवित्र स्थान इसराइल के दक्षिणी भाग में स्थित था, बेतेल, जिसका नाम बदलकर बेथ-एवन, बेकार का घर हो गया है।

यह ईश्वर का घर नहीं है; यह एक बेकार का घर है, और ऐसा इसलिए है क्योंकि यह समन्वयवादी बछड़े की पूजा से जुड़ा हुआ है। "...इसके लोग इसके लिए शोक मनाते हैं, और इसके मूर्तिपूजक पुजारी भी, जो इसके और इसकी महिमा पर आनन्दित होते थे, क्योंकि यह उनसे दूर चला गया है।" और इसलिए, वे इस छवि से प्रार्थना करते हैं जिसे वे ईश्वर का प्रतिनिधित्व करने वाला मानते हैं, लेकिन अंततः, छवि उन्हें बचाने वाली नहीं है। छवि निर्वासन में भाग लेने जा रही है, और अंततः इसे असीरियन द्वारा ले जाया जाएगा।

"...यह चीज़ महान राजा के लिए एक श्रद्धांजलि के रूप में अश्शूर ले जाई जाएगी। एप्रैम को शर्मिंदा होना पड़ेगा, और इस्राएल को अपनी मूर्ति पर शर्म आएगी।" तो आखिरकार, यह बछड़ा देवता अश्शूर के राजा की ट्रॉफी केस में समाप्त होने जा रहा है, और इसलिए कोई कारण नहीं है कि इस्राएल को इसकी पूजा करनी चाहिए। उन्होंने इस छवि के साथ उसका प्रतिनिधित्व करने की कोशिश करके भगवान की महानता को नीचा दिखाया है।

हम अध्याय 13 में जाते हैं और हमें कुछ अन्य महत्वपूर्ण संदर्भ मिलते हैं। पहले मैं अध्याय 11 में से एक को पढ़ूंगा। पद 1 और 2 में, "...जब इस्राएल बालक था, तब मैं उससे प्रेम करता था, और इस्राएल अर्थात् मिस्र में से मैंने अपने पुत्र को बुलाया।

जितना अधिक वे पुकारते थे, उतना ही वे दूर चले जाते थे। वे बाल देवताओं को बलि चढ़ाते और मूर्तियों को बलि चढ़ाते रहते थे।" इसलिए, यहोवा ही एकमात्र परमेश्वर था जो उन्हें मिस्र से बाहर लाया। यहोवा ही वह परमेश्वर था जिसने उन्हें बचाया था, जिसने उन्हें छुड़ाया था, जिसने उनके साथ एक विशेष संबंध स्थापित किया था।

फिर भी वे अपनी पूजा और भक्ति बाल देवताओं को दे रहे हैं। अब हमारे पास अध्याय 13 की आयत 1 और 2 में मूर्ति पूजा का एक दिलचस्प संदर्भ है। मैं इस विशेष अंश में पाए जाने वाले कुछ विवरणों पर काम करना चाहूँगा। वहाँ लिखा है, "...जब एप्रैम बोला, तो काँप उठा।

वह इस्राएल में महान था।" इसलिए, एक समय पर, एप्रैम के गोत्र का एक ऊंचा स्थान था। राजा यारोबाम एप्रैम के गोत्र से आया था। याद रखें, एप्रैम यूसुफ के धन्य पुत्रों में से एक था।

लेकिन बाल के कारण वह पाप का भागी हुआ और मर गया। इसलिए, एप्रैम के गोत्र का अतीत बहुत अच्छा था, यूसुफ का पुत्र, वह गोत्र जिससे उत्तरी राज्य का पहला राजा आया था। लेकिन बाल की पूजा करके उसने पाप का भागी हुआ और उसका परिणाम यह हुआ कि वह मर गया।

हमारे पिछले पाठ में हमने होशे की पुस्तक में पाई जाने वाली व्यर्थता की बयानबाजी के बारे में बात की थी। होशे लगातार उन पर जोर देते जा रहे हैं, आखिरकार बाल पर आपकी निर्भरता एक बुरी रणनीति है क्योंकि बाल वह नहीं है जो आपकी ज़रूरतों को पूरा कर सकता है। बाल वह नहीं है जो आपको उर्वरता और बारिश और समृद्धि और अच्छी फसल देता है।

आखिरकार, ये आशीर्वाद प्रभु से आते हैं। वह वही है जो अगर वे उस पर भरोसा करेंगे तो ओस की तरह उन पर आशीर्वाद बरसाएगा। वह खुद, उसकी उपस्थिति उनके लिए ताज़गी भरी बारिश बन जाएगी।

यदि वे न्याय का पालन करेंगे, तो प्रभु उन पर धार्मिकता की वर्षा करेंगे। तो यहाँ फिर से, हमारे पास व्यर्थता की यह बयानबाजी है। इस्राएल ने जीवन और आशीर्वाद की आशा में बाल की पूजा की, और इस प्रक्रिया में, वे मर गए।

हमने कल उस विचार के बारे में भी बात की जिसे ग्रेग बील ने पुराने नियम में मूर्तिपूजा के बारे में बात करते हुए व्यक्त किया है। मूर्तिपूजा की एक समस्या यह है कि अंततः लोग उन देवताओं की तरह बन जाते हैं जिनकी वे पूजा करते हैं। मूर्तियाँ गूंगी हैं, वे बहरी हैं, वे बोल नहीं सकतीं, वे सुन नहीं सकतीं।

इसलिए, जो लोग उनका अनुसरण करते हैं, वे आध्यात्मिक रूप से सुस्त हो जाते हैं और सत्य को देखने में असमर्थ हो जाते हैं। जब लोग सत्य में अपना विश्वास छोड़ देते हैं, तो यह कोई समस्या नहीं है कि वे किसी भी चीज़ पर विश्वास नहीं करेंगे। वे भोले बन जाते हैं और किसी भी चीज़ पर विश्वास कर लेते हैं।

जब इस्राएल सोने के बछड़े की पूजा करता है, तो वे एक जिद्दी बछिया की तरह बन जाते हैं और वे अपने तरीके से और अपनी दिशा में जाना चाहते हैं। परमेश्वर के सुधार को सुनने के बजाय, परमेश्वर अंततः उनके निर्वासन के माध्यम से उन पर एक जूआ डालने जा रहा है और उन्हें इस तरह आज्ञाकारिता में लाया जाएगा। यहाँ इस मार्ग में, इस्राएल बाल की तरह बन जाता है क्योंकि वहाँ कहा गया है कि उन्होंने बाल की पूजा करके अपराध किया और फिर वे मर गए।

याद रखें कि कनानी महाकाव्य के एक हिस्से में बाल खुद मोआट के प्रभाव में आ गया था। मोआट ने उसे हरा दिया था। उसे हर साल अधोलोक में जाने और मृत्यु की शक्ति के अधीन होने के लिए मजबूर किया जाता था।

खैर, जब इस्राएल ने अपनी वफ़ादारी और भक्ति और अपनी पूजा बाल को दी, तो वे अंततः उसके जैसे बन गए। इसके परिणामस्वरूप, जिस तरह से बाल मोआट के प्रभाव में आया, उसी तरह इस्राएल खुद भी मृत्यु की शक्ति के अधीन आ गया। उस जीवन का अनुभव करने के बजाय

जो उन्होंने सोचा था कि बाल उन्हें लाएगा, वे मृत्यु और विनाश और सभी वाचा के अभिशापों का अनुभव करने लगे।

अपनी सुरक्षा, आशीर्वाद या सुरक्षा के स्रोत के रूप में प्रभु के अलावा किसी और चीज़ की ओर देखना एक असफल रणनीति है। इस्राएल उस सबक को दर्दनाक तरीके से सीख रहा था। अब यह पद 2 में भी कहा गया है, और अब वे और अधिक पाप करते हैं।

मूर्तिपूजा हमेशा एक निराशाजनक चीज़ बन जाती है क्योंकि भगवान जो वादा करता है उसे पूरा नहीं कर सकता और इसलिए आपको इसे और अधिक गहन तरीके से खोजना होगा। और उन्होंने अपने लिए धातु की मूर्तियाँ बनाईं। अपनी चाँदी से कुशलता से बनाई गई मूर्तियाँ, वे सभी कारीगरों का काम थीं।

यहाँ समापन कथन है जिस पर मैं चाहता हूँ कि हम ध्यान केन्द्रित करें। यह उनके बारे में कहा गया है, और यहाँ इस कथन को ESV में इस तरह से पढ़ा गया है, जो लोग मानव बलि चढ़ाते हैं वे बछड़ों को चूमते हैं। उस अभिव्यक्ति का वास्तव में क्या अर्थ है? फिर से, ESV इसे पढ़ने जा रहा है, जो लोग मानव बलि चढ़ाते हैं वे बछड़ों को चूमते हैं।

हम किस बारे में बात कर रहे हैं? खैर, सबसे पहले यह ध्यान रखना दिलचस्प है कि अध्याय 13 के इस अंश में, श्लोक 1 और 2 में, हमारे पास श्लोक 1 में बाल का संदर्भ है और श्लोक 2 में बछड़े के देवता का संदर्भ है। इन समन्वयकारी तत्वों को एक साथ लाया जा रहा है। कनानी धर्म की प्रथाओं में से एक और उन चीजों में से एक जिसकी भगवान ने निंदा की थी, वह थी बाल बलि की यह प्रथा। और इसलिए, ESV, जैसा कि यह श्लोक 2 का अनुवाद करता है, वास्तव में यहाँ बाल बलि का संदर्भ देता है और इसे उत्तरी राज्य में प्रचलित के रूप में देखता है।

अब, अगर हम इस प्रथा और इस अवधारणा को पुराने नियम की बड़ी कहानी में देखें, तो लैव्यव्यवस्था अध्याय 20 की आयत 2 से 5 में बाल बलि के बारे में बात की जाएगी। यह विशेष रूप से मोलेक नामक एक ईश्वर से जुड़ा हुआ है। उस ईश्वर के नाम का अर्थ है कि वह एक राजा है।

वह अम्मोनियों का परमेश्वर है। लेकिन यिर्मयाह अध्याय 32 पद 35 में, बच्चों की बलि फिर से मोलेक से जुड़ी है, लेकिन यह किसी तरह से बाल की पूजा से भी जुड़ी है, जिसे खुद कनानी देवताओं में एक राजा के रूप में देखा जाता था। हमारे पास उत्तरी राज्य इस्राएल में बच्चों की बलि का कोई प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं है जब तक कि हमारे पास यहाँ यह पद न हो।

लेकिन 2 राजा अध्याय 16 और 2 राजा अध्याय 23 में, हमारे पास यहूदा के दो राजाओं के बारे में कथन हैं जिन्होंने वास्तव में अपने बच्चों को आग में बलि के रूप में जला दिया था। उनमें से एक राजा आहाज था जिसने दक्षिणी राज्य में प्रभु की पूजा में कई मूर्तिपूजक और समन्वयवादी तत्वों को शामिल किया था। दूसरा राजा जो ऐसा करता है, जो अपने बेटों को आग में से गुज़रने देता है, वह यहूदा का राजा मनश्शे है, जिसके बारे में राजा यह कहने जा रहा है कि वह यहूदा का अब तक का सबसे दुष्ट राजा था।

उसने 55 साल तक राज किया। उसने अपने देश में अपने से पहले के एमोरी राजाओं से भी ज़्यादा दुष्टता की। इसलिए, दक्षिणी राज्य में इस बात के सबूत हैं कि यहूदा के कुछ राजा भी बच्चों की बलि देने में शामिल थे।

योशियाह द्वारा किए गए सुधारों में से एक था टोफेट को अपवित्र करना, जो हिन्नोम की घाटी में था, जो इन बाल बलि से जुड़ा था ताकि उनका अभ्यास न किया जा सके। तो, यहाँ क्या हो रहा है? क्या होशे अध्याय 13 में बाल बलि का कोई और संदर्भ है? पुराने नियम में बाल बलि के अधिक दिलचस्प उदाहरणों में से एक यिप्तह की प्रतिज्ञा है जो हमें न्यायियों की पुस्तक में दी गई है। ईश्वर के साथ व्यवस्था या ईश्वर के साथ सौदा करते समय, यिप्तह कहता है, हे प्रभु, यदि आप मुझे युद्ध में सफलता दिलाते हैं, तो मैं अपने द्वार से जो कुछ भी निकलेगा उसे आपको बलि के रूप में दूंगा।

जब मैं घर लौटता हूँ, तो उसकी बेटी ही दरवाजे से बाहर आती है। क्योंकि उस समय इस्राएल के इतिहास में वे अपने दृष्टिकोण और अपने धर्मशास्त्र में मूर्तिपूजक हो गए थे, यिप्तह को लगता है कि परमेश्वर से किए गए उस वादे को पूरा करना उसका दायित्व है, भले ही परमेश्वर पूरे पुराने नियम में कहता है कि बाल बलि ऐसी चीज़ है जिससे मैं घृणा करता हूँ। इस्राएल के देश में जाने से पहले, व्यवस्थाविवरण अध्याय 12, श्लोक 30 और 31 में यह कहा गया है।

यहाँ बाल बलि के बारे में यहोवा का आकलन है। जब तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे सामने उन जातियों को नष्ट कर दे, जिन्हें तुम निर्वासित करने जा रहे हो, और तुम उन्हें निर्वासित करके उनके देश में बस जाओ, तो सावधान रहना कि तुम उनके पीछे चलने के लिए फँस न जाओ। तुम्हारे सामने उनके विनाश के बाद, तुम उनके परमेश्वर के बारे में यह पूछते हुए नहीं कि, ये जातियाँ अपने देवताओं की सेवा कैसे करती थीं? मैं नहीं चाहता कि तुम उन कामों को करो जो इन लोगों ने धार्मिक प्रथाओं और अपने देवताओं के प्रति भक्ति की अभिव्यक्ति के रूप में किए थे।

तुम अपने परमेश्वर यहोवा की आराधना इस तरह से मत करो, क्योंकि उन्होंने अपने देवताओं के लिए जो घृणित काम किए हैं, उनसे यहोवा घृणा करता है। क्योंकि उन्होंने अपने बेटों और बेटियों को भी अपने देवताओं के लिए आग में जला दिया। और इसलिए, न्यायियों के काल में, यिप्तह और इस्राएली अपने दृष्टिकोण में काफी हद तक इतने कनानी बन गए हैं, उनके दृष्टिकोण और उनके धर्मशास्त्र में इतने मूर्तिपूजक बन गए हैं कि यिप्तह का मानना है कि अपनी बेटी को परमेश्वर को बलिदान के रूप में चढ़ाना कुछ ऐसा है जो उसे प्रसन्न करेगा।

अब, कनानियों के बीच बाल बलि के प्रमाण सीमित हैं, लेकिन पुराने नियम के बाहर कुछ ऐसे प्रमाण हैं जो कनानियों के बीच इस प्रथा का सुझाव देते हैं। जॉन बार्टन इसके बारे में कुछ बात करते हैं। टायर शहर में , आठवीं शताब्दी से छठी शताब्दी तक, वहाँ एक टोफेट का प्रमाण है , जो एक ऐसा शब्द है जो पवित्र कब्रिस्तान को संदर्भित करता है।

और इस कब्रिस्तान में , इस कब्रिस्तान में, कलश थे जिनमें बच्चों के अवशेष या जानवरों की हड्डियाँ थीं। वहाँ पर स्तम्भ या मूर्तियाँ या शिलालेख हैं जो संकेत देते हैं कि इन कलशों में रखे

अवशेषों को कनानी देवताओं को अर्पित किया गया था। पुराने नियम के युग के बाद, वहाँ एक टोफ़ेट भी है जिसे पुरातत्वविदों ने उत्तरी अफ्रीका में कार्थेज की फोनीशियन कॉलोनी में पाया है।

और उस टोफेट में भी, उन्हें कलश और कब्र स्थल मिले जिनमें बच्चों और मेमनों की हड्डियाँ थीं। और वहाँ ऐसे स्तम्भ हैं जो संकेत देते हैं कि इन कब्रिस्तान कलशों में जो बच्चे हैं वे या तो कनानी देवी, तन्नित , या बाल-हामोन को समर्पित थे। अब रोमनों ने भी अपने लेखन में कार्थेज में बच्चों को देवताओं के लिए बलि के रूप में आग में जलाने की प्रथा का उल्लेख किया है।

तो, इसका समर्थन करने के लिए सबूत मौजूद हैं। क्या होशे यहाँ अध्याय 13, श्लोक 2 में इसी बारे में बात कर रहा है? यहाँ हिब्रू में, हमारे पास शाब्दिक रूप से एक कथन है जो कहता है, मनुष्यों के बलिदानकर्ता बछड़ों को चूमते हैं। जब हम इस तरह की दो संज्ञाओं के बीच संबंध देखते हैं, तो उस संबंध को कई तरीकों से समझा जा सकता है।

रिश्ते के दूसरे शब्द को, जैसा कि हम वाक्यविन्यास के अनुसार विश्लेषण करते हैं, जननात्मक मामले के रूप में देखा जाता है। इसलिए ऐसे कई तरीके हैं जिनसे हम इस विचार को पढ़ सकते हैं या कम से कम दो या तीन मुख्य तरीके हैं जिनसे हम पुरुषों के बलिदानकर्ता को पढ़ सकते हैं । यदि इसे हम व्यक्तिपरक जननात्मक के रूप में संदर्भित करेंगे, तो पुरुष बलिदान की क्रिया को अंजाम दे रहे होंगे।

इसलिए, यह वास्तव में मानव बलि के बारे में कुछ नहीं कहेगा। यदि यह एक उद्देश्यपूर्ण संबंधकारक है, तो हम बलि की वस्तु होने वाले पुरुषों या मनुष्यों के बारे में बात कर सकते हैं। कभी-कभी, इन प्रकार के निर्माणों में का संबंध, शब्द के बाद दूसरा शब्द, बस व्यापक समूह या प्रजाति या बड़ी श्रेणी के बारे में बात कर सकता है जिसका पहला शब्द एक हिस्सा है।

मुझे लगता है कि यहाँ शायद ESV ने इसका गलत अनुवाद किया है। मानव बलि का संदर्भ होने के बजाय, यह केवल उन पुरुषों के बारे में बात कर रहा है जो इज़राइल में बलि चढ़ाते हैं। पुरुषों की प्रजाति, जो बलि देने वाले हैं , उत्तरी राज्य के लोग जब वे भगवान की पूजा करते हैं, जब वे ऐसा कर रहे होते हैं, तो वे बछड़ों को चूमते हैं।

इसलिए उत्तरी राज्य में बाल बलि के विशिष्ट संदर्भ के बजाय, जो कि कनानियों की पूजा का एक हिस्सा था, यहाँ फिर से हमारे पास केवल श्रद्धांजलि और भक्ति का संदर्भ है जो वे सोने के बछड़े को देते हैं। अब यहाँ छवि यह है कि वे बछड़ों को चूमते हैं। और हम जानते हैं कि एक मानव राजा के चरणों में झुकना, जिस तरह से जेहू करता है, उदाहरण के लिए, ब्लैक ओबिलिस्क में जब वह असीरियन राजा के सामने झुकता है और उसे श्रद्धांजलि देता है, यह सम्मान और भक्ति व्यक्त करने का एक तरीका है।

और इसलिए जब हम यहाँ बछड़ों को चूमने के बारे में बात करते हैं, तो यह उस पूजा और सम्मान और भक्ति के बारे में बात करता है जो वे दान या बेथेल में अपने अभयारण्य में बछड़े के देवताओं को दे रहे हैं। ठीक है, अब बछड़ों को चूमने वाले मनुष्यों की उस छवि के बारे में सोचें। और बॉब चिशोलम ने अपने हैंडबुक ऑन द प्रोफेट्स में मूर्तिपूजा की अपमानजनक प्रकृति के बारे में यहाँ एक टिप्पणी की है।

मुझे लगता है कि यह एक अच्छा कथन है। वह कहते हैं, कल्पना कीजिए कि ईश्वर की छवि में बने इंसानों द्वारा अपने हाथों से बनाए गए बछड़ों की मूर्तियों को चूमना कितना बेतुका है। और इसलिए मुझे लगता है कि यहाँ हमें मूर्तिपूजा की अपमानजनक प्रकृति की याद दिलाई गई है।

मनुष्य के रूप में परमेश्वर की आराधना करना हमें ऊंचा उठाता है, हमें उस चीज़ तक ऊपर उठाता है जिसके लिए हमें बनाया गया था और जिसे करने के लिए बनाया गया था। उत्पत्ति 1:26 से 28 में मनुष्यों को स्वयं परमेश्वर की छवि के रूप में वर्णित किया गया है। हमें छोटे देवताओं की तरह बनाया गया था, मूर्तियों की तरह जिन्हें परमेश्वर के उप-प्रतिनिधि होने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

उसकी आराधना करने और उसके शासन के अधीन रहने से, हम एक उच्च पद पर आसीन हो जाते हैं। यह तथ्य कि पृथ्वी पर हर इंसान परमेश्वर की छवि का प्रतिनिधित्व करता है, मानव स्वभाव के बारे में सबसे श्रेष्ठ बात है जिसे हम संभवतः कह सकते हैं। लेकिन जब आदम का पतन हुआ, तो उसने मानव जाति में मूर्तिपूजा की शुरुआत की।

इसके परिणामस्वरूप, ईश्वर की छवि के रूप में अपने भाग्य और अपने व्यवसाय को जीने के बजाय, हमने इसे उलट दिया और, खुद की पूजा करने के प्रयास में, वास्तव में खुद को नीचा दिखाने लगे। और ईश्वर की महिमा और महानता को प्रतिबिंबित करने के बजाय, रोमियों का कहना है कि हमने इसे विकृत कर दिया और हमने निर्माता के बजाय सृष्टि की पूजा करना शुरू कर दिया। और इसलिए, मुझे लगता है कि उत्तरी इज़राइल राज्य में पूजा करने वालों की इस तस्वीर में यह सब और मूर्तिपूजा की अपमानजनक प्रकृति का प्रतिबिंब है, जो झुकते हैं और बछड़ों को चूमते हैं।

यह ईश्वर द्वारा बनाई गई आराधना से बिलकुल अलग है। इसलिए, होशे की पुस्तक में एक विचार है, और मुझे लगता है कि यह वास्तव में प्रचलित विचार है कि इस्राएल ने आध्यात्मिक व्यभिचार किया है। उन्होंने इन अन्य देवताओं के पीछे वेश्यावृत्ति की है, और यही कारण है कि ईश्वर का न्याय और ईश्वर का क्रोध उनके विरुद्ध आने वाला है।

एक आखिरी आयत में यह कहा गया है, अध्याय 13, आयत 9, हे इस्राएल, वह तुम्हें नष्ट कर देता है, क्योंकि तुम मेरे विरुद्ध हो, अपने सहायक के विरुद्ध हो। वह जिसे परमेश्वर ने इस्राएल के लिए भरोसा करने के लिए बनाया था, वह राजा जिसने उनकी रक्षा करने का वादा किया था, वह प्रभु था। वह उनका सहायक था।

वह ही था जो इस संकट के बीच में, वह ही था जो उनकी मदद कर सकता था। यदि वे अपने पाप से फिर जाएँ, तो प्रभु उनका सहायक होगा और उन्हें आशीर्वाद देगा। यदि वे झूठे देवताओं, मूर्तियों और बछड़े के देवताओं पर अपना भरोसा त्याग दें और पश्चाताप और विश्वास के साथ प्रभु की ओर मुड़ें और केवल उन पर भरोसा करें, तो प्रभु के पास उन्हें उनके शत्रुओं से बचाने की शक्ति थी।

लेकिन समस्या यह है कि वे अपने मददगार के खिलाफ हो गए हैं। यहाँ फिर से व्यर्थता की बयानबाजी है। अपनी समस्याओं का समाधान खोजने के बजाय वे अपना समाधान खुद बनाने की कोशिश कर रहे थे।

वे अपनी रणनीतियों पर भरोसा कर रहे थे। वे अपनी योजनाओं पर भरोसा कर रहे थे। वे उन देवताओं पर भरोसा कर रहे थे जिन्हें मानव हाथों से बनाया गया था और अंततः इनमें से कुछ भी काम नहीं करने वाला था।

मुझे लगता है कि होशे की पुस्तक को पढ़ते हुए हम मूर्ति पूजा की गंभीरता और इस्राएल के लोगों के लिए मूर्ति पूजा द्वारा प्रस्तुत की गई समस्या को समझते हैं। लेकिन जैसा कि हमने पिछले पाठ में चर्चा की थी, हमारे लिए कभी-कभी एक समस्या यह होती है कि जब हम समकालीन अनुप्रयोग के लिए इसके बारे में सोचते हैं या यदि मैं एक पादरी हूँ और मैं पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के माध्यम से प्रचार कर रहा हूँ, तो मैं मूर्ति पूजा के मुद्दों को आज के लोगों के लिए वास्तविक कैसे बनाऊँ? अब कैल्विन ने कहा कि मानव हृदय एक मूर्ति बनाने वाली फैक्ट्री है। मुझे लगता है कि वह बिल्कुल सही है।

जॉन समझता है कि जब वह अपनी देखरेख में आने वाली कलीसियाओं को लिखता है, और कहता है, अपने हृदय को मूर्तिपूजा से बचाए रखो। लेकिन जब हम पुराने नियम को पढ़ते हैं, तो हमारे मन में यह प्रवृत्ति होती है कि हम कहें, मैं इसे नहीं समझ पाया। मैं इस्राएलियों को नहीं समझ पाया।

मुझे समझ में नहीं आता कि वे ऐसी चीज़ों की पूजा कैसे कर सकते हैं जो स्पष्ट रूप से इतनी झूठी हैं। हम मूर्तियों के आगे सिर नहीं झुकाते। हम पत्थर के देवता नहीं बनाते।

हमारे पास धातु की मूर्तियाँ नहीं हैं। तो, क्या इसका मतलब यह है कि हम मूर्तिपूजा से संघर्ष नहीं करते? यदि आप पुराने नियम का प्रभावी ढंग से प्रचार और शिक्षण करने जा रहे हैं, तो आपको इन ग्रंथों का प्रचार करते समय और वास्तव में पुराने नियम के विभिन्न भागों का प्रचार करते समय एक तरीका खोजना होगा ताकि आप अपने मण्डली के लोगों को यह समझने में मदद कर सकें या उन्हें यह समझने में मदद कर सकें कि प्राचीन निकट पूर्व में इस्राएल की मूर्तिपूजा आज हमारे जीवन पर कैसे लागू होती है और कैसे जुड़ती है? एक पुस्तक जिसने मुझे इसके बाइबिल धर्मशास्त्र के माध्यम से सोचने में मदद की है, वह है ग्रेग बील की पुस्तक, वी बिकम व्हाट वी वर्शिप। और हमने इसके बारे में बात की है।

इस मुद्दे से निपटने वाला एक और पादरी कार्य टिम केलर की पुस्तक नकली देवता है। अपने उपदेश में, जैसा कि उन्होंने इस मुद्दे से निपटा है और न्यूयॉर्क शहर में मूर्तिपूजा के बारे में बात की है, वे आज हमारे जीवन में मौजूद कुछ मूर्तियों की पहचान करने में मदद करते हैं जो शायद इस्राएल के उस समय के अनुरूप हैं जब वे बाल और बछड़े के देवताओं की पूजा करते थे। याद रखें, वे इस विचारधारा की ओर आकर्षित होते हैं क्योंकि यह उनकी संस्कृति का प्रचलित विश्वास है।

हम अपनी संस्कृति की प्रचलित मानसिकता और मान्यताओं के कारण विशेष मूर्तियों की ओर आकर्षित होते हैं जो मूल रूप से ईश्वर के विरुद्ध हैं लेकिन मीडिया के माध्यम से, हमारे साथ रहने वाले लोगों के माध्यम से और यहां तक कि कभी-कभी हमारे अपने परिवारों के माध्यम से भी हमारे दिमाग में व्याप्त हो जाती हैं। और इसलिए, हम इन विशेष मूर्तिपूजाओं की ओर आकर्षित होते हैं क्योंकि हम मानते हैं कि यह हमारे जीवन को उसी तरह जीने की एक प्रभावी रणनीति है जिस तरह से होशे के दिनों में इस्राएलियों का मानना था कि तूफान के देवता की पूजा करने से उन्हें कृषि आशीर्वाद मिलेगा। इसलिए, मैं उन कुछ चीजों की एक सूची के माध्यम से काम करना चाहूंगा जिनके बारे में केलर ने मूर्तिपूजा के संदर्भ में बात की है।

वह शक्ति की मूर्तिपूजा का उल्लेख करता है। जीवन का अर्थ केवल तभी है, या मेरा मूल्य तभी है जब मेरे पास दूसरों पर शक्ति और प्रभाव हो। और जब जॉन दुनिया की चीजों के बारे में बात करता है जो जीवन के गर्व से संबंधित हैं, तो उसमें शक्ति शामिल है।

स्वीकृति मूर्तिपूजा: जीवन का अर्थ केवल तभी है जब मुझे अन्य लोगों द्वारा प्यार और सम्मान दिया जाता है। आरामदायक मूर्तिपूजा, जीवन का अर्थ केवल तभी है या मेरा मूल्य केवल तभी है जब मेरे पास इस तरह का आनंद अनुभव और जीवन की एक विशेष गुणवत्ता हो। कई ईसाई, उस विशेष मूर्ति के कारण, और यह कुछ ऐसा है जिससे मैं अपने जीवन में संघर्ष करता हूं, बाइबिल के संदेश का विरोध करते हैं, जो कहता है कि यदि आप यीशु के अनुयायी बनने जा रहे हैं, तो आपको अपना क्रूस उठाना होगा और उसका अनुसरण करना होगा।

छवि मूर्तिपूजा, फिर से, मुझे लगता है कि जीवन के गर्व से संबंधित है। जीवन का अर्थ केवल तभी है जब मेरे पास एक विशेष प्रकार का रूप या शरीर की छवि हो। मूर्तिपूजा पर नियंत्रण रखें, जीवन का अर्थ केवल तभी है जब मैं किसी विशेष क्षेत्र में अपने जीवन पर महारत हासिल करने में सक्षम हूं।

मूर्तिपूजा में मदद करना, जीवन का अर्थ या मेरा मूल्य तभी है जब लोग मुझ पर निर्भर हैं और उन्हें मेरी ज़रूरत है। निर्भरता मूर्तिपूजा, जीवन का अर्थ तभी है जब कोई मेरी रक्षा करने और मुझे सुरक्षित रखने के लिए मौजूद हो। स्वतंत्रता मूर्तिपूजा, जीवन का अर्थ तभी है जब मैं किसी की देखभाल करने के लिए दायित्वों या जिम्मेदारियों से पूरी तरह मुक्त हूँ।

काम मूर्तिपूजा और कई लोग अपने काम को भगवान बना देते हैं या अपने काम को उस तरह समर्पित कर देते हैं जैसा कि केवल भगवान को दिया जाना चाहिए। जीवन का अर्थ केवल तभी है जब मैं अत्यधिक उत्पादक हूं और अच्छे काम कर रहा हूं या अपने करियर में आगे बढ़ रहा हूं। उपलब्धि मूर्तिपूजा: जीवन का अर्थ है अगर मुझे मेरी उपलब्धियों के लिए पहचाना जाता है और अगर मैं अपने करियर में उत्कृष्टता प्राप्त कर रहा हूं।

भौतिकवाद मूर्तिपूजा, जीवन का अर्थ केवल तभी है, जब मेरे पास एक निश्चित स्तर की संपत्ति, वित्तीय स्वतंत्रता और एक निश्चित मात्रा में संपत्ति हो। धर्म मूर्तिपूजा हमारे लिए विश्वासियों के रूप में एक प्रलोभन बन सकती है। जीवन का अर्थ केवल तभी है जब मैं अपने धर्म के नैतिक नियमों का पालन कर रहा हूँ और इसकी गतिविधियों में निपुण हूँ।

मैं चाहता हूँ कि लोग पहचानें कि मैं कितना धार्मिक व्यक्ति हूँ। व्यक्तिगत मूर्तिपूजा, जीवन का अर्थ या मेरा मूल्य तभी है जब मेरे जीवन में यह एक व्यक्ति खुश हो या मुझसे खुश हो। अधार्मिक मूर्तिपूजा, जो हमारे समाज का एक गुण है।

जीवन का अर्थ केवल तभी है जब मैं संगठित धर्म से पूरी तरह स्वतंत्र महसूस करता हूँ और मेरी अपनी स्वयं की नैतिकता है। हम देखते हैं कि हमारी संस्कृति विवाह के बारे में नियमों और कानूनों को संशोधित करने के तरीके और उसमें क्या शामिल है, इस बारे में हमारी समझ के साथ ऐसा कर रही है। नस्लीय या सांस्कृतिक मूर्तिपूजा, जीवन का अर्थ केवल तभी है जब मेरी जाति और मेरी संस्कृति उन्नत हो और श्रेष्ठ के रूप में पहचानी जाए।

आंतरिक रिंग मूर्तिपूजा, जीवन का अर्थ केवल तभी है जब कोई विशेष सामाजिक समूह या पेशेवर समूह मुझे अपने घेरे में आने देता है। पारिवारिक मूर्तिपूजा, यहाँ तक कि हमारे परिवार और हमारे रिश्ते भी, हाँ, वे मूर्तियाँ बन सकते हैं जिन पर हम भरोसा करते हैं। जीवन का अर्थ केवल तभी है जब मैं या मेरे बच्चे या मेरे माता-पिता मुझसे खुश हों।

रिश्तों में मूर्तिपूजा: मैं कॉलेज और सेमिनरी के छात्रों और कई लोगों की सेवा करता हूँ, क्योंकि वे विवाह से जुड़ी समस्याओं का सामना कर रहे हैं। कई अन्य लोग सोचते हैं कि विवाह इस मूर्तिपूजा का समाधान है, लेकिन ऐसा नहीं है। जीवन का अर्थ केवल तभी है जब मिस्टर या मिस राइट मुझसे प्यार करते हैं।

मूर्तिपूजा से पीड़ित, जीवन का अर्थ केवल तभी है जब मैं किसी समस्या से पीड़ित हूँ, और केवल तभी मैं खुद को महान या प्यार के योग्य महसूस करता हूँ या मैं अपने दिल में मौजूद अपराध बोध से निपटने में सक्षम हूँ। विचारधारा मूर्तिपूजा, जीवन का अर्थ केवल तभी है, मेरे पास केवल तभी शक्ति है जब मेरा राजनीतिक या सामाजिक कारण या पार्टी प्रगति कर रही हो और शक्ति या प्रभाव में बढ़ रही हो। इसलिए मुझे लगता है कि शिक्षकों के रूप में, पादरी के रूप में, हममें से जो पादरी मंत्रालय और दूसरों के लिए भूमिका में शामिल हैं, जब हम ईश्वर के वचन को पढ़ाते हैं, तो हमारे लिए यह बहुत महत्वपूर्ण है कि हम पुराने नियम को केवल इतिहास के पाठ के रूप में न पढ़ाएँ, न कि केवल यह कहें कि देखो, इस्राएल के लोगों को इन देवताओं से समस्याएँ थीं, हम नहीं जानते कि वे क्या थे, हम नहीं जानते कि वे कैसे हैं, बल्कि उस मूर्तिपूजा के मूल कारणों को समझना और फिर यह दिखाना कि यह आज कैसे लागू होता है।

मुझे लगता है कि अगर हम ऐसा कर सकें, तो कई मायनों में, लोग पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के महत्व को समझना शुरू कर देंगे, क्योंकि यह हमारे जीवन के लिए प्रासंगिक है। हम इस बारे में पहले ही बात कर चुके हैं, लेकिन मुझे लगता है कि जितना अधिक हम भविष्यवक्ताओं को पढ़ते हैं, उतना ही हम पहचानते हैं कि वे भविष्यवक्ता हैं जो लोगों को उपदेश दे रहे हैं, भविष्य में क्या होने वाला है, इसकी भविष्यवाणी करने वाले भविष्यवक्ता से कहीं अधिक। हम यह पता लगाना शुरू करते हैं कि प्रभु के साथ उनके रिश्ते और उनके साथ वाचा और रिश्ते में लोगों के लिए जो मुद्दे और समस्याएं और संघर्ष थे, वे मेरे जीवन में भी चल रही चीजों से बहुत मिलते-जुलते हैं।

इसलिए, इस्राएली ऐसी किसी समस्या से जूझ नहीं रहे हैं जो हमारे लिए विदेशी है। याद रखें, केल्विन हमें बताता है कि चाहे वह प्राचीन इस्राएल में हो या 21वीं सदी में संयुक्त राज्य अमेरिका में, हम मूर्तिपूजा से जूझते हैं। पुराने नियम में कुछ ऐसे अंश हैं जिन्होंने मुझे इसे समझने में विशेष रूप से मदद की है।

यहेजकेल अध्याय 14 में, जब यहेजकेल यहूदा के लोगों और नेताओं की मूर्तिपूजा के बारे में बात करता है, तो वह कहता है, उन लोगों के साथ समस्या यह है कि उन्होंने अपने दिलों में मूर्तियाँ खड़ी कर ली हैं या बना ली हैं। इसलिए, यहेजकेल के संदेश के दूसरे हिस्से इस तथ्य के बारे में बात करने जा रहे हैं कि परमेश्वर भयभीत है। वह क्रोधित है।

वह लोगों के खिलाफ़ क्रोध से भड़क उठेगा क्योंकि उन्होंने मंदिर में मूर्तियाँ और जानवरों की तस्वीरें और हर तरह की घिनौनी चीज़ें रखी हैं। यह घृणित था। यह घिनौना था।

यह परमेश्वर को नापसंद था। लेकिन बड़ा मुद्दा सिर्फ एक मूर्ति या प्रतिमा बनाना नहीं था। बड़ा मुद्दा यह है कि इस्राएल के लोगों के दिल में क्या था।

एक और अंश जिसने मुझे पुराने नियम की मूर्तिपूजा की आज हमारे जीवन में प्रासंगिकता को समझने में मदद की है, वह हमारे लिए अय्यूब अध्याय 31 में पाया जाता है। और याद रखें कि अय्यूब 31 एक ऐसा अंश है जहाँ अय्यूब परमेश्वर के सामने अपनी बेगुनाही का विरोध कर रहा है। और मैं एक ईमानदार व्यक्ति हूँ।

मैं ईश्वरभक्त व्यक्ति हूँ। मैं आपकी भक्ति में लीन हूँ। और मुझे लगता है कि अय्यूब यह कहना चाह रहा है, हे प्रभु, मैंने ऐसा कुछ नहीं किया है जिसके लिए मुझे ऐसी सज़ा और पीड़ा सहनी पड़े।

लेकिन इन सभी बातों के बीच , जहाँ वह अपनी ईमानदारी के बारे में बात करता है, वह उस तरह के जीवन के बारे में भी बात करता है जो वह जीता है। वह श्लोक 24 में यह कथन करता है, यदि मैंने सोने पर भरोसा किया है या शुद्ध सोने पर भरोसा किया है, यदि मैंने अपने धन के प्रचुर होने पर या मेरे हाथ में बहुत कुछ आने पर आनन्दित हुआ है। इसलिए, अय्यूब कहता है, अरे, मेरी ईमानदारी को दिखाने वाली एक बात यह है कि मैंने अपना भरोसा सोने या अपने धन या अपनी संपत्ति पर नहीं रखा है। और हम अय्यूब की पुस्तक से जानते हैं कि अय्यूब एक धनी व्यक्ति था।

यह उसके लिए एक प्रलोभन होता। फिर, जब वह यह उल्लेख करता है, यदि मैं अपने धन से आनन्दित होता क्योंकि यह प्रचुर था, श्लोक 25, तो ध्यान दें कि वह इसे श्लोक 26 में किससे जोड़ता है। वह कहता है, यदि मैंने सूर्य को चमकते हुए या चंद्रमा को वैभव में चलते हुए देखा होता और मेरा हृदय चुपके से मोहित हो गया होता और मेरा मुंह मेरे हाथ को चूमता, तो यह एक अधर्म होता जिसके लिए न्यायाधीशों द्वारा दण्ड दिया जाता।

क्योंकि मैं ऊपर के परमेश्वर के प्रति झूठा होता। जब अय्यूब सूर्य की ओर देखने, चंद्रमा की ओर देखने और उसे आकाश में देखने की बात करता है, तो वह जिस बारे में बात कर रहा है, प्राचीन निकट पूर्व में उन वस्तुओं की अक्सर पूजा की जाती थी और उन्हें देवताओं के रूप में मान्यता दी

जाती थी। इसलिए, जब अय्यूब बात करता है, अगर मेरे मुंह ने मेरे हाथ को चूमा होता, तो हमारे पास, होशे 13.2 की तरह, सूर्य या चंद्रमा की ओर चूमने का विचार इन सूक्ष्म देवताओं के प्रति भक्ति की अभिव्यक्ति के रूप में दिया गया है।

अय्यूब कहता है, अगर मैंने ऐसा किया होता या मैं उस तरह की मूर्तिपूजक पूजा में शामिल होता, तो मैं परमेश्वर के प्रति विश्वासघाती होता। लेकिन इस अंश में जो बात दिलचस्प है वह यह है कि हम इसके अंतिम भाग को, सूर्य या चंद्रमा की ओर चुंबन करते हुए, एक घृणित मूर्तिपूजक प्रथा के रूप में देखते हैं। लेकिन यह अय्यूब के मन में सोने पर भरोसा करने और अपने धन पर आनन्दित होने से जुड़ा हुआ है।

उनके लिए, धन पर भरोसा करना ईश्वर के प्रति विश्वासघात करने जैसा ही था, जैसे कि आकाशीय देवताओं की पूजा करना। इसलिए, मूर्तिपूजा केवल छवियों और मूर्तियों और प्राचीन निकट पूर्व के मूर्तिपूजक धार्मिक विश्वासों के बारे में नहीं है। यह ईश्वर के अलावा अन्य चीजों पर अपना भरोसा रखने के बारे में है।

ईमानदारी से कहें तो, पश्चिमी दुनिया की प्राथमिक मूर्ति, ईश्वर के साथ हमारे रिश्ते में हमारा दैनिक संघर्ष समृद्धि और धन के साथ होने वाला है क्योंकि यह हमारी संस्कृति का एक व्यापक हिस्सा है। हमारी संस्कृति की प्रचलित मान्यता यह है कि आपका मूल्य, आपकी सुरक्षा और एक इंसान के रूप में आपका महत्व आपकी संपत्ति और आपके पास क्या है और क्या है, इस पर निर्भर करता है। कई मायनों में, चर्च ने उस संस्कृति के झूठ को खरीद लिया है।

मैंने दूसरे दिन एक ब्लॉग पढ़ा जिसमें बताया गया था कि कैसे चर्च, कई मायनों में, एक क्रूज जहाज की तरह बन गया है। यह सादृश्य काफी प्रभावी है। यह दर्शाता है कि कैसे मंत्रालय और चर्च की भूमिका और कार्य अक्सर उन लोगों की सेवा करने के बारे में नहीं है जो खो गए हैं और मसीह के बिना हैं या जो लोग ज़रूरतमंद हैं।

यह अक्सर चर्च के लोगों का मनोरंजन करने और उनकी देखभाल करने के लिए होता है क्योंकि हमने अपनी संस्कृति के झूठ को खरीद लिया है। मुझे एक बार एक लेखक ने इस बारे में बात की थी कि 18वीं और 19वीं सदी में अमेरिका के दक्षिण में रहने वाले ईसाइयों के लिए यह कैसा होगा, और वे अपनी गुलामी की प्रथा के लिए भगवान को जवाब देते हैं। क्या होगा अगर वे भगवान के सामने खड़े होकर बस बयान दें? खैर, मैंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि हमारी संस्कृति इसी पर विश्वास करती है।

इसे हमारे समय के लोगों ने स्वीकार किया था। यह परमेश्वर के सामने स्वीकार्य उत्तर नहीं होगा। जब आज 20वीं से 21वीं सदी में अमेरिका में रहने वाले ईसाई, परमेश्वर के सामने खड़े होते हैं, और जब हम अपने जीवन का लेखा-जोखा देते हैं, तो शायद हम कल्पना कर सकते हैं कि प्रभु हमसे संवाद कर रहे हैं और कह रहे हैं, तुमने अपनी संपत्ति और अपनी संपत्ति पर इतना भरोसा क्यों किया? तुमने उस धन का उपयोग राज्य के उद्देश्यों के लिए या अन्य लोगों की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए क्यों नहीं किया? हमारा जवाब यह है कि हम बस वही कर रहे थे जो संस्कृति कहती है कि परमेश्वर को 18वीं या 19वीं सदी के ईसाइयों से ज़्यादा स्वीकार्य नहीं होगा जो अपनी

गुलामी का बचाव करने के लिए बड़े पैमाने पर संस्कृति की प्रचलित मान्यताओं का उपयोग करते हैं।

इसलिए, मुझे लगता है कि हमारे लिए पुराने नियम को इस तरह से पढ़ाना बहुत ज़रूरी है जिससे लोगों को इसकी प्रासंगिकता और व्यावहारिकता को समझने में मदद मिले। मुझे सेमिनरी में पुराने नियम को पढ़ाना बहुत पसंद है क्योंकि मैं जानता हूँ कि अक्सर मुझे उन छात्रों को प्रभावित करने का अवसर मिलता है जो बाहर जाकर दूसरों की सेवा और सेवा करने जा रहे हैं, पुराने नियम को आपके मंत्रालय का हिस्सा होना चाहिए। जब आप देखते हैं कि छात्र इसे समझने लगे हैं, या शायद जब आप ये वीडियो देखते हैं और खुद इसे समझना शुरू करते हैं, तो मुझे सच में लगता है कि भगवान ने मुझे जो काम करने के लिए बुलाया है, उनमें से एक है लोगों को इसे समझने में मदद करना।

प्राचीन इज़राइल में जो समन्वयवाद की प्रथा चल रही थी, उसके बारे में क्या कहा जाए और आज यह हमारे लिए किस तरह प्रासंगिक हो सकती है? अब, मुझे दक्षिण अमेरिका के उन देशों में जाने का अवसर मिला है जहाँ समन्वयवाद की प्रथाएँ बहुत स्पष्ट हैं। वहाँ सैंटेरिया जैसे धर्म थे जो प्रेतवाद और कैथोलिक धर्म को एक साथ लाते थे। दक्षिण अमेरिका के कुछ प्रमुख शहरों में जहाँ मैं गया, वहाँ की सड़कों के कोनों पर आपको अक्सर ऐसी चीज़ें देखने को मिलेंगी जिन पर वर्जिन मैरी की छवि हो सकती है और ऐसी चीज़ें जो इन आत्माओं को दी जाती हैं।

ईसाई धर्म और आत्माओं की पूजा तथा जीववाद को इस तरह के खतरनाक समन्वयवादी मिश्रण में एक साथ लाया गया है। यह अक्सर ईसाई धर्म में धर्मांतरण को सुविधाजनक बनाने का एक तरीका था। इसलिए, हम इसे अमेरिकियों के रूप में देखते हैं और कहते हैं कि हमारे पास ये संघर्ष नहीं हैं।

मैं सेमिनरी गया था। मैं स्पष्ट रूप से समन्वयवाद में विश्वास नहीं करता। मैंने व्यवस्थित धर्मशास्त्र पढ़ा है।

लेकिन क्या हम अमेरिकी लोग भी उसी तरह समन्वयवादी प्रथाओं में शामिल हो रहे हैं जिस तरह इज़राइल था? प्राचीन इज़राइल में समन्वयवाद के कुछ दिलचस्प पुरातात्विक उदाहरण हैं। इनमें से कुछ उत्तर से हैं और कुछ दक्षिण से। कुंटिलेट नामक स्थान पर यहूदा के दक्षिणी भाग में अजरूद नामक स्थान के जंगल में अनेक वस्तुएं पाई गईं जिन पर चित्र और शिलालेख अंकित थे।

ये लोग इजराइल के लोगों से आए थे और शायद यहाँ एक अलग समूह भी हो, लेकिन वे इजराइली थे। वे यहूदा के लोग थे जो प्रभु में आस्था रखते थे। मेरा मानना है कि इनमें से एक शिलालेख कुंटिलेट में एक जार पर पाया गया है। अजरुद के पास यह है।

इसमें लिखा है, यहोवा और उसके अशेरा से तुम्हें आशीर्वाद मिले। और इसलिए, जिन लोगों ने यह शिलालेख बनाया है वे इस्राएली हैं जो यहोवा में विश्वास करते हैं, लेकिन उन्होंने कनानाइट विचार को मान लिया है कि प्रभु के पास एक महिला संगिनी या एक महिला यौन साथी है जिस

तरह एल और बाल के पास था। इसके अलावा एक बछड़े के देवता की छवि है, बेल नाम का एक देवता।

उन्हें बछड़े के रूप में चित्रित किया गया है। वह कमर से नीचे नग्न है। इस बारे में कुछ चर्चा हुई है कि क्या यह वह तरीका है जिससे यह विशेष छवि यहोवा को बछड़े के देवता के रूप में दर्शाने के लिए बनाई गई है? उसके बगल में एक कुर्सी पर बैठी एक महिला संगीत वाद्ययंत्र बजा रही है।

तो, क्या यह बछड़ा भगवान यहोवा और उसके अशेरा का प्रतिनिधित्व करता है? हम इस बारे में पूरी तरह से स्पष्ट नहीं हैं, लेकिन शिलालेख स्वयं उस समन्वयवाद को दर्शाता है जो वहाँ है। कुंटिलेट में पाई गई एक अन्य छवि में भी अजरुद में , वहाँ भक्तों का एक समूह है जो अपने हाथ प्रभु के सामने उठाए हुए हैं। यह कहता है, यहोवा और उसके अशेरा से तुम्हें आशीर्वाद मिले।

यहोवा तुम्हें आशीर्वाद दे और तुम्हारी रक्षा करे और तुम्हारे साथ रहे। जब मैं उस शिलालेख को पढ़ता हूँ तो जो बात मुझ पर प्रभाव डालती है वह यह है कि उन्होंने पेंटाटेच, टोरा से पुरोहितीय आशीर्वाद लिया है, और उन्होंने इसे ईश्वर के बारे में बहुत ही बुतपरस्त समझ में शामिल कर लिया है। यह समन्वयवाद है।

इन उपासकों को शायद यह भी एहसास नहीं हुआ होगा कि वे कुछ ऐसा कर रहे हैं जो परमेश्वर को नापसंद है। मुझे लगता है कि प्राचीन इस्राएल और प्राचीन यहूदा में, एक बहुत बड़ा मुद्दा और एक बड़ी समस्या यह थी कि यह परमेश्वर की एक सामान्य मानक समझ थी। 10वीं शताब्दी ईसा पूर्व से मेगिडो के पास तानक में एक पंथ स्टैंड की खोज की गई थी।

फिर से, इसमें समन्वयवाद की स्पष्ट झलक मिलती है। इसका उपयोग इस्राएली उपासना के लिए किया जाता था। इस पंथ स्टैंड में चार स्तंभ हैं।

नीचे वाले हिस्से में एक नग्न महिला प्रजनन देवी, अशेरा की छवि है। दूसरे स्तर पर एक अदृश्य स्थान में दो सींग वाले जीव हैं, जो संभवतः करूबों के ऊपर सिंहासनारूढ़ अदृश्य यहोवा का प्रतिनिधित्व करते हैं। तीसरे स्तर पर जीवन का वृक्ष है और संभवतः यह अशेरा का एक पंथिक प्रतिनिधित्व है।

फिर चौथे स्तर पर, आपके पास एक बछड़ा है जिसकी पीठ पर एक सूरज है और संभवतः फिर से यहोवा का प्रतिनिधित्व करता है, दान और बेथेल के बछड़ों में से एक, और फिर भगवान को शायद वहाँ सूर्य द्वारा दर्शाया गया है। वे छवियाँ, एक महिला प्रजनन देवी, यहोवा, करूबों के ऊपर सिंहासनारूढ़ अदृश्य ईश्वर, एक सुनहरे बछड़े के रूप में यहोवा, यह सब एक साथ लाया गया है। जे. ग्लेन टेलर, फिर से होशे पर अपनी टिप्पणी में, इस समन्वयवाद के बारे में बात करने जा रहे हैं।

उनका कहना है कि बाइबिल के लेखकों द्वारा यहोवा और बाल जैसे अन्य देवताओं की पूजा के बीच किए गए स्पष्ट अंतर के बावजूद, मूर्तिपूजकों ने संभवतः अपनी प्रथाओं को यहोवा की पूजा के साथ ओवरलैप या यहां तक कि मेल खाते हुए देखा होगा। उनका कहना है कि धार्मिक समझौते की ओर ले जाने वाली तर्कसंगतता कोई नई बात नहीं है। वास्तव में, इस्राएलियों ने बाल,

अशेरा और अन्य देवताओं की पूजा को यहोवा की पूजा के साथ मिलाने का एक तरीका खोज लिया।

और फिर, हम कहेंगे, ठीक है, हमारी पूजा में ऐसे तत्व नहीं हैं। लेकिन जब हम प्रभु और ईसाई धर्म में विश्वास को एक साथ मिलाते हैं, और संस्कृति का विचार है कि समृद्धि हमें ईश्वर की नज़र में सफल और धन्य बनाती है, जब हम इसे समृद्धि धर्मशास्त्र के समन्वयवादी मिश्रण में अपनाते हैं, तो एक तरह से, हम उसी तरह के समन्वयवाद में संलग्न होते हैं जो प्राचीन इस्राएलियों ने किया था। जब हम राष्ट्रवाद का समर्थन करते हैं और चर्च के इतिहास में राष्ट्रवाद और ईसाई धर्म को एक साथ लाते हैं, तो ऐसे उदाहरण हैं कि यह बहुत खतरनाक बात क्यों हो सकती है।

इसलिए होशे की पुस्तक में मूर्तिपूजा का यह विचार आज भी एक वास्तविक मुद्दा है। यह पुस्तक हमारे लिए प्रासंगिक और लागू है। एक अंतिम मुद्दा है जिसे होशे उठाने जा रहा है जो विशेष रूप से दर्शाता है कि कैसे इस्राएल के लोगों ने प्रभु के प्रति व्यभिचार और बेवफाई की थी।

इस अंतिम मुद्दे के रूप में जो बात सामने आने वाली है वह यह है कि भविष्यवक्ता यह कहने जा रहा है कि इस्राएल ने जिस तरह से विदेशी राष्ट्रों के साथ गठबंधन किया है, उससे उसने यहोवा के विरुद्ध विश्वासघात किया है। और इसलिए, इस बारे में बात करने वाले कई अंश हैं। होशे अध्याय 5 पद 13 और 14, जब एप्रैम ने अपनी बीमारी और यहूदा ने अपने घाव को देखा, तब एप्रैम अश्शूर गया और महान राजा को संदेश भेजा, लेकिन वह तुम्हें ठीक करने या तुम्हारे घाव को ठीक करने में सक्षम नहीं है।

क्योंकि मैं एप्रैम के लिये सिंह और यहूदा के घराने के लिये जवान सिंह के समान ठहरूंगा। मैं आप ही फाड़कर चला जाऊंगा, और कोई छुड़ा न सकेगा।

और इसलिए, जब कोई परेशानी होती थी तो उनकी प्रतिक्रिया यह होती थी कि जो कुछ हो रहा था उसका राजनीतिक समाधान खोजने की कोशिश की जाए। अध्याय 7 श्लोक 8 और 11, एप्रैम खुद को लोगों के साथ मिलाता है। एप्रैम एक केक है जिसे पलटा नहीं गया है।

होशे उनके राजनीतिक गठबंधनों के बारे में क्या सोचते हैं, यह यहाँ बताया गया है। इज़राइल एक पैनकेक की तरह है जो एक तरफ से जला हुआ है और दूसरी तरफ से कच्चा है। उसकी आधी-अधूरी नीतियाँ उसे नहीं बचा पाएंगी।

उसने खुद को दूसरे लोगों के साथ मिलाने की कोशिश की है। उसे इन देशों पर भरोसा है। इन गठबंधनों के आध्यात्मिक बेवफाई का एक रूप दर्शाने का कारण यह है कि, फिर से, वे ईश्वर के अलावा किसी और चीज़ पर भरोसा कर रहे हैं।

इसका उचित अनुप्रयोग यह नहीं है कि यह एक अनुस्मारक है कि अमेरिका को संयुक्त राष्ट्र या नाटो में शामिल नहीं होना चाहिए या आज राष्ट्रों को राजनीतिक गठबंधन नहीं करना चाहिए। इसका अनुप्रयोग यह है कि ईश्वर के लोगों को अंततः अपनी सुरक्षा और संरक्षण के एकमात्र स्रोत के रूप में प्रभु पर भरोसा करना चाहिए। और इसलिए ईसाई होने के नाते भी, जब हम राजनीतिक समाधानों की ओर देखना चाहते हैं या अपनी समस्याओं के समाधान के लिए

राजनीतिक नेताओं की ओर देखते हैं, जब हम संयुक्त राज्य अमेरिका और हमारी सेना और हमारी सरकार की सैन्य सुरक्षा पर अपना भरोसा रखते हैं, तो हम अंततः किसी ऐसी चीज़ पर भरोसा कर रहे होते हैं जो अंततः और किसी स्तर पर और किसी तरह से और इतिहास के किसी बिंदु पर हमें बहुत निराश करने वाली है।

अध्याय 7, श्लोक 11, एप्रैम एक कबूतर की तरह है, मूर्ख और निर्बुद्धि, मिस्र को पुकारता हुआ, अश्शूर जा रहा है, और जब वे जाएँगे, तो मैं उन पर अपना जाल फैलाऊँगा। मैं उन्हें आकाश के पक्षियों की तरह नीचे गिराऊँगा। मैं उनकी मण्डली को दी गई रिपोर्ट के अनुसार उन्हें अनुशासित करूँगा।

और इसलिए, इज़राइल एक मूर्ख कबूतर की तरह है, जो इधर-उधर उड़ता रहता है। वे यहां जाते हैं, वे वहां जाते हैं, वे मिस्र जाते हैं, वे असीरिया जाते हैं। वे अपनी समस्या को हल करने के लिए राजनीतिक और सैन्य रूप से जो कुछ भी कर सकते हैं, कर रहे हैं।

उनकी समस्या राजनीतिक नहीं है; उनकी समस्या आध्यात्मिक है, और उन्हें परमेश्वर की ओर वापस लौटने की आवश्यकता है। यदि वे ऐसा नहीं करते हैं, तो अंततः, वे नष्ट हो जाएँगे। अध्याय 8, श्लोक 9 और 10, क्योंकि वे अश्शूर तक चले गए हैं, एक जंगली गधा अकेले भटक रहा है।

एप्रैम ने प्रेमियों को किराये पर रखा है, यद्यपि वे राष्ट्रों के बीच सहयोगियों को किराये पर रखते हैं, मैं जल्द ही उन्हें इकट्ठा करूँगा और राजा और हाकिम जल्द ही कर के कारण तड़प उठेंगे। ये रणनीतियाँ उन्हें बचाने वाली नहीं हैं। अध्याय 8, श्लोक 14, इस्राएल अपने निर्माता को भूल गया है, और वे प्रभु के अलावा किसी और चीज़ पर भरोसा कर रहे हैं।

होशे के अध्याय 12, श्लोक 1 में, एप्रैम हवा से भोजन करता है और पूरे दिन पूर्वी हवा का पीछा करता है। जब आप हवा से भोजन करते हैं तो आप कितने तृप्त होंगे? यह वास्तव में संतोषजनक भोजन नहीं है। क्या आप कभी पूर्वी हवा को पकड़ने में सक्षम होंगे? नहीं, वे ऐसा करने में सक्षम नहीं होंगे।

इसीलिए वे झूठ को बढ़ाते हैं, हिंसा को बढ़ाते हैं, अश्शूर के साथ वाचा बाँधते हैं, और तेल मिस्र ले जाया जाता है, और इनमें से कोई भी गठबंधन उन्हें कभी नहीं बचा सकता। पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं में यह याद दिलाया गया है कि राजनीतिक गठबंधन अंततः वह नहीं है जो इज़राइल को बचाने जा रहा है। भविष्यवक्ता यशायाह, अश्शूर संकट में, दक्षिण के नेताओं से, यहूदा के नेताओं से बात करते हुए, यही संदेश देने जा रहा है।

वह उन लोगों पर हाय-तौबा मचाने जा रहा है जिन्होंने मिस्र पर भरोसा किया है। उनका मानना है कि मिस्र के साथ गठबंधन करने से वे अश्शूरियों के खिलाफ़ मिस्रियों की भूमिका निभा पाएँगे। यशायाह कहता है कि इससे तुम नहीं बच पाओगे।

और यशायाह 28 में व्यंग्यात्मक तरीके से, भविष्यवक्ता कहता है, यहूदा के नेता दावा करते हैं, हमने मृत्यु के साथ वाचा बाँधी है। उन्होंने वास्तव में मृत्यु के साथ वाचा नहीं बाँधी थी, और उन्होंने मिस्र के साथ वाचा बाँधी थी जिसके बारे में उन्हें लगता था कि वह उनकी रक्षा करेगी। यशायाह

कहता है, तुमने वास्तव में जो किया है वह यह है कि तुमने मृत्यु के साथ वाचा बाँधी है, और यह तुम्हारे विनाश की ओर ले जाने वाली है।

हाय उन पर जो मिस्र पर भरोसा करते हैं क्योंकि वे मनुष्यों और घोड़ों पर भरोसा करते हैं। वे यहोवा पर भरोसा नहीं करते। भजन 20 इस्राएल के लोगों से यह कहता है: कुछ लोग घोड़ों पर और कुछ लोग रथों पर भरोसा करते हैं, लेकिन हम अपने परमेश्वर यहोवा पर भरोसा करेंगे।

और यही वह बात है जिसे आठवीं शताब्दी में इस्राएल और यहूदा के लोग भूल गए। मैं हमारे लिए समीक्षा करना चाहता हूँ और हमें याद दिलाना चाहता हूँ, यहाँ वे विशिष्ट तरीके दिए गए हैं जिनसे होशे 4-14 हमारे लिए स्थापित करता है कि इस्राएल के लोगों ने प्रभु के विरुद्ध आध्यात्मिक विश्वासघात किया है। नंबर एक, उन्होंने वाचा हेसेड, प्रभु के प्रति वफ़ादारी को त्याग दिया है।

दूसरा, उन्होंने परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन नहीं किया। तीसरा, उन्होंने मूर्तिपूजा का अभ्यास किया है, और इसमें बाल और कनानी देवी-देवताओं की पूजा और बछड़े के देवता की उनकी समन्वयात्मक पूजा दोनों शामिल हैं। और फिर चौथा और अंत में, वे अन्य राष्ट्रों के साथ गठबंधन में शामिल हो गए थे जहाँ वे परमेश्वर के बजाय राष्ट्रों पर अपना भरोसा रख रहे थे।

भगवान का संदेश है कि, आखिरकार, ये सभी चीजें उन्हें विफल कर देंगी। जिस किसी चीज पर हम भरोसा करते हैं और जिस किसी रणनीति को हम देखते हैं, वह अंततः अंतिम चीज या हमारे जीवन में सबसे महत्वपूर्ण चीज है, जिस किसी चीज पर हम भरोसा करते हैं, समर्पित होते हैं, सेवा करते हैं, भगवान से ज्यादा प्यार करते हैं या जिसे हम भगवान के स्थान पर रखते हैं, वह अंततः हमें निराश करने वाली है। मुझे लगता है कि होशे ने आठवीं शताब्दी के इज़राइल को एक संदेश दिया था जो आज बहुत प्रासंगिक है क्योंकि लोग अपनी रणनीतियों, अपनी मूर्तियों और हमारे आस-पास की संस्कृति की झूठी मान्यताओं से जूझ रहे हैं।

ईश्वर ने हमें प्रकाश और अंतर्दृष्टि, बुद्धि और समझ दी है ताकि हम जान सकें कि वास्तविक जीवन क्या है और यह जान सकें कि वास्तविक जीवन मसीह के साथ संबंध में पाया जाता है। यह एक ऐसा संदेश है जिसे हम अपने आस-पास की संस्कृति के साथ साझा कर सकते हैं जो आज भी उतनी ही मूर्तिपूजक है जितनी कि आठवीं शताब्दी ईसा पूर्व में इज़राइल ने जिस संस्कृति के साथ बातचीत की थी।

यह डॉ. गैरी येट्स की पुस्तक 12 पर उनकी व्याख्यान श्रृंखला में है। यह व्याख्यान 15, होशे, इज़राइल की आध्यात्मिक बेवफाई, भाग 3 है।